उत्पत्ति होती है। डॉ० मुखर्जी के लिखा है कि मूल्य सार्वभौमिक होते हैं परन्तु उनकी प्रकृति सार्वभौमिक नहीं होती। इसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं यद्यपि सभी समाजों में मूल्य पाये जाते हैं परन्तु उनकी प्रकृति एक विशेष से संबंधित है। उदाहरण के लिए - विवाह एक सामाजिक मूल्य है यह एक सार्वभौमिक क्रिया है परन्तु गाय में इसे धार्मिक संस्था माना जाता है और अन्य नहीं।

3. मूल्यों का स्तर →

डॉ० मुखर्जी के अनुसार मूल्य सिद्धान्त सामाजिक संगठन के स्तरों पर आधारित है और मूल्यों के माध्यम से सामाजिक संस्था एवं प्रतिमान का विश्लेषण होता है। प्रत्येक समाज में सामाजिकता के दर्शन होते हैं। प्रत्येक स्तर पर सामाजिक संगठन के अनुसार ही मूल्यों का विकास होता तो डॉ० मुखर्जी के अनुसार सामाजिक संगठन के चार स्तर हैं। प्राथमिक अवस्था में इन संगठनों में वैयक्तिकता नहीं पाई जाती है। शनैः शनैः इन संगठनों में वैयक्तिकता का विकास होता है और यही कारण है कि वर्तमान संगठनों में उत्कृष्ट वैयक्तिकता के दर्शन होते हैं।

डॉ० मुखर्जी के अनुसार व्यक्तित्व के निर्माण में मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मानव विकास की संरचना को परिभाषित एवं संचालित करने में मूल्य व्यवस्था का अत्यधिक महत्व रहा है। व्यक्ति विशेष मूल्यों का परिवर्तन करता रहता है और फलस्वरूप वह मूल्यों के उसी स्तर तक पहुँच जाता है जहाँ पहुँचकर मूल्यों के बिना व्यक्ति अपनी समाज में एकता स्थापित करने में असमर्थ रहता है। व्यक्ति और मूल्य एक दूसरे से

1. मूल्यों का अनुभव → डॉ० राधाकमल मुखर्जी का विचार है कि सभी मूल्य सामाजिक होते है व्यक्ति के अनुसार व्यक्ति की कुछ आवश्यकताएँ होते है और वह उन्हे पूरा करने के लिए प्रयास करता है ऐसा करते समय उसके सामने अनेक सामाजिक समस्याएँ आती है जिसके समाधान के संदर्भ में उसे अनेक सामाजिक अनुभव होते है सामाजिक विकास और प्रगति के लिए सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया जाता है और इस तरह समाज में मूल्यों का जन्म होता है राधाकमल मुखर्जी के अनुसार मानव जीवन के दो पहलु है वास्तविक और आदर्श, वास्तविक जीवन में सभी एक-दूसरे को सहयोग प्रदान करते है और इस सहयोग के माध्यम से समाज में मुल्यों का जन्म होता है मुल्यों में मानव शक्तिया है जिसके द्वारा मानवीय प्रवृत्तियां एवं उसकी इच्छाओं को नियंत्रित किया जाता है व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार उसके आदर्शों को नियन्त्रित करती है, जब व्यक्ति उच्च आदर्शों के अनुकुल अपने व्यवहार को नियंत्रित करता है तथा साध्य साधन के संदर्भ में अपनी क्रियाओं का प्रतिपादन करता है तो मुल्यों का जन्म होता है।

2. मूल्यों का क्षेत्रिय आधार → डॉ० मुखर्जी का विचार है कि प्रत्येक सामाजिक घटना एक विशेष परिस्थिति के संदर्भ में होती है और परिस्थिति शास्त्रीय (ecological) विशेषताओं के फलस्वरूप समाज में मुल्यों की

अपनाता है जो विश्व की एकता की स्थापना में सहायक होती है।

उपर्युक्त विवेचना से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सामाजिक जीवन में मूल्यों के सिद्धान्त का प्रतिपादन और समाज का सामान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करके डॉ० राधा कमल मुखर्जी ने सामाजिक विचारों के इतिहास में असीम योगदान दिया है। समाज का सामान्य सिद्धान्त एक ऐसा स्तर है जिसमें जीवन मूल्य ऐतिहासिक संस्कृति तथा जीवन की मौलिक एकता को एक-साथ बाँधने की शक्ति है। प्रो० मुखर्जी के विचारों में सार्वभौमिकता का स्वर सुनायी पड़ता है और उनका सिद्धान्त विभिन्न समाजों के लिए आदर्श बना है वह समाज-शास्त्र तथा विज्ञान के दर्शन को एक मानते हैं तथा संसार के समस्त जातियों को भी एक मानते हैं इस तरह वह "वसुधैव: कुटुम्बकम्" का प्रतिपादन करते हैं। डॉ० मुखर्जी की गणना 20वीं सदी के महानतम सामाजिक विचारकों के मध्य की जाती है।

→ (उक्त) समाजशास्त्र ...

संबंधीत है और अपने जीवन में विभिन्न कार्यों से जुड़ता हुआ व्यक्ति निरंतर अपनी सामाजीक जीवन में सुधार करता है और नैतिक जीवन व के विकास के साथ ही मुल्यों की वृद्धि में भी योगदान देता है डॉ० मुखर्जी ने मानव व्यवहार के निम्नलिखि तीन स्तर बताये है—

(i) जैविकीय सामाजीक स्तर—

मानव के व्यवहार के जैविक सामाजीक स्तर वह होता है जब मनुष्य सामाजीक नियमों का पालन करता हुआ अपनी प्राणी-शास्त्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है उन आवश्यकताओं में वह जो भी व्यवहार करता है वह मुल्यों के द्वारा निर्धारित एवं निर्देशित होता है।

(ii) मानसिक एकता का स्तर—

मानसिक एकता का स्तर वह है, जब मनुष्य का व्यक्तित्व इतना विकसित हो जाता है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य सदस्यों के सहयोग से करता है इसी अवस्था में व्यक्ति में मिल-जुलकर रहने की भावना का विकास होता है सामाजीक प्राणी होने के नाते वह सामाजीक कार्यों में भाग लेना चाहता है और समाज में एकता के मुल्य को ग्रहण करता है

(iii) अध्यात्मिक स्तर—

डॉ० मुखर्जी का विचार है कि, अध्यात्मिक स्तर मानव व्यक्तित्व के विकास की अन्तिम अवस्था है भारतीय दर्शन में हम उसे "सत्यम, शिवम, सुन्दरम्" की अवस्था के नाम से पुकारते है उनके अनुसार अध्यात्मिक स्तर पर मानव व्यक्तित्व के विकास का यही समय होता है और वह ऐसे मुल्यों